मंगल पाठ

नमन हमारा अरहंतों को, जो जग के सब ताप मिटाते,
जिनकी पावन चरण-धूलि से, पग-पग पर तीरथ बन जाते।
नमन हमारा सिद्ध प्रभु को, तोड़ चुके जो भव की कारा,
जिनके ज्योतिर्मय चिन्तन से, कर्म नशें होवे उजियारा।
नमन हमारा आचार्यों को, विश्व-बंध जो आचरणों से,
सहज मुक्ति लिपटी रहती है, जिनके मंगलमय चरणों से।
फिर है नमन उपाध्यायों को, जो जग में निर्ग्रन्थ कहाते,
ज्ञान ज्योति से तिमिर मिटाकर, पथ भूलों को राह दिखाते।
नमन हमारा साधुजनों को, जो परहित के है अवतारी,
कोटि जनों के लिए बनी हैं, जिनकी पावन निधियां सारी।
पांच नमन ये पुण्य विधायक, इनसे होता पाप शमन है,
सभी मंगलों में मंगलमय, यही प्रथम मंगलाचारण है।

ॐ पंचपरमेष्ठी का प्रतीक ॐ

पाँच परमेष्ठियों के नामों के आद्य अक्षरों को लेकर "ॐ" पद की रचना हुई है। अरहंत और अशरीर (सिद्ध) का अ, आचार्य का आ, उपाध्याय का उ और मुनि का म। इस प्रकार अ+अ+आ+उ+म् =ओम् =ॐ पद का निर्माण हुआ है। जैसा कि निम्नाकिंत गाथा से स्पष्ट है:-

णमो अरिहंता असरीरा आइरियां तक उवज्झाया।
मुणिणो पढमक्खर णिप्पण्णो ओंकारो पंच परमेष्ठी॥

ब्रह्मदेव ने उपर्युक्त पंचपरमेष्ठी वाचक मंत्र के अर्थ समझने पर जोर देते हुए कहा है :- "मन्त्रशास्त्र के सर्व पदों में सारभूत, इस लोक में और परलोक में इष्टफल देने वाले, पंचपरमेष्ठी के वाचक इन पदों का अर्थ जानकर तथा अंतरंग में अनन्त ज्ञानादि गुणों के स्मरणरूप और बाह्य में वचन के शुद्ध उच्चारण रूप इन पदों का जाप करो। तथा शुभोपयोग रूप त्रिगुप्त अवस्था में मौनपूर्वक इनका ध्यान करो।" इस प्रकार "ॐ" अक्षर भी पंचपरमेष्ठी का प्रतिपादक होने से णमोकार मंत्र की भाँति ही एकाक्षरी मंत्र है। इस मंत्र के माध्यम से भी पंचपरमेष्ठी का ध्यान और स्मरण किया जाता है।